भजन

तर्ज–हजार राहें मुड़ के देखीं

बोहोत है सोचा पिया ये हमने
कुछ बात ऐसी समझ में आई
पिया वहीं पे जगाओ हमको
जहाँ पे तुमने रूहें भुलाई

1– जहाँ पे हम फरामोश हुए थे
वहीं पे हम तो बैठे हुए हैं
हम तो तुम्हारे चरणों में प्रीतम
ये खेल अर्श से देख रहे हैं
2– हहमें पिया जो पता ये होता
के ऐसी हालत हमारी होगी
तुम सामने हो पिया हमारे
फिर भी ये ऐसी जुदाई होगी
3– वो कैसी जिद्द थी पिया हमारी
न मानी बात हमने तुम्हारी
गुनाह हमारा माफ करो अब
पिया मेरे अब हम तो हैं हारी